

डॉ. क्रेग कीनर, अधिनियम, व्याख्यान 12, अधिनियम 9

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह अधिनियम 9 पर सत्र 12 है।

खैर, शाऊल लोगों को गिरफ्तार करता रहा है, लेकिन अब शाऊल को स्वयं प्रभु ने गिरफ्तार कर लिया है। क्या आपने कभी सोचा है कि ईश्वर आपका उपयोग नहीं कर सका या ईश्वर आपका बहुत अधिक उपयोग नहीं कर सका? खैर, अगर भगवान शाऊल का उपयोग कर सकते हैं, तो भगवान हम में से किसी का भी उपयोग कर सकते हैं।

वास्तव में, वह प्रयोग 1 तीमुथियुस अध्याय 1 में भी किया गया है। यहाँ ईश्वर अपनी संप्रभु शक्ति को दर्शाता है। उत्पीड़क अनुग्रह का एजेंट बन जाता है। और हम इसे कभी-कभी मैकाबीन साहित्य की तरह पढ़ते हैं जहाँ भगवान एक उत्पीड़क को रोकता है, लेकिन यहाँ भगवान वास्तव में उसे अपने उद्देश्यों के लिए एक पात्र बनाता है।

शाऊल ने उत्पीड़न के इस स्तर की शुरुआत की। इसीलिए 9:31 में उसके रूपांतरण के बाद और प्रेरितों द्वारा यह सुनिश्चित करने के बाद कि वह शहर से बाहर चला जाए, आपको शांति मिले। लेकिन शाऊल ही इस स्तर के उत्पीड़न की शुरुआत करने वाला है।

वह महायाजक से अनुशंसा पत्र लेने जाता है। सिफ़ारिश पत्र उस समय एक बहुत ही सामान्य पत्र-पत्रिका का रूप था क्योंकि यदि आप आगे बढ़ना चाहते थे, तो आपको मदद के लिए किसी की ज़रूरत होती थी। और इसलिए, आप उच्च सामाजिक स्तर के किसी व्यक्ति के पास जाएंगे और वे अपने किसी सहकर्मी या कभी-कभी किसी अधीनस्थ को अनुशंसा पत्र लिखेंगे।

और सिसरो इसमें माहिर था. वास्तव में, उनके पत्रों के संग्रह में से पुस्तक 13 केवल अनुशंसा पत्र हैं। और आपके पास प्राचीन काल के कई अन्य अनुशंसा पत्र भी हैं।

लेकिन किसी तरह सिसरो इसमें इतना माहिर था कि उसने अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग अनुशंसा पत्र लिखना सीख लिया। कभी-कभी उन्होंने एक से अधिक लोगों से कहा, यह लड़का सबसे अच्छा है। मैं उसके जैसे किसी की अनुशंसा नहीं कर सकता।

जैसा कि फिलिप्पियों के अध्याय दो में पॉल तीमुथियुस के बारे में कहता है, सिसरो ने कहा कि यह एक से कुछ अधिक व्यक्तियों के लिए था, लेकिन उसने आमतौर पर इसे केवल कुछ ही लोगों के लिए आरक्षित रखा। लेकिन दूसरी बार वह कहता था, मेरे प्रति अपनी वफादारी दिखाओ। आप मेरे मित्र हैं और इसलिए मैं जानता हूँ कि मैं जो कहूँगा आप उससे भी अधिक करेंगे।

नए टेस्टामेंट, फिलेमोन, या ऋण के आह्वान में हमारे पास जिस प्रकार के अनुशंसा पत्र हैं। उस समय पारस्परिकता एक बड़ा सामाजिक मुद्दा था। तो, मुझ पर आपका एहसान है।

खैर, यह मेरे लिए इसका लाभ उठाने का समय है। वे आमतौर पर इसे इस तरह से नहीं रखते। या यदि आप मेरे लिए यह करते हैं तो मैं आपका एहसान मानूंगा।

मैं आपका कर्जदार हूँ। इसकी जो भी कीमत होगी, मैं चुका दूँगा। ऐसी चीज़ें जो हमारे पास नए नियम में सिफ़ारिशी पत्रों में हैं।

न्यू टेस्टामेंट में हमारे कुछ पत्र आंशिक हैं, इसका एक भाग अनुशंसा पत्र है। फोएबे की सिफ़ारिश की गई है, रोमियों 16, 1 और 2, इत्यादि। खैर, वैसे भी, शाऊल महायाजक से अनुशंसा पत्र चाहता है।

यह बहुत सम्मोहक होगा। यह सुझाव देगा कि महायाजक अपने मिशन का समर्थन करता है। हमने पहले इस बारे में बात की थी कि वह महायाजक तक कैसे पहुंच सकता था।

खैर, इस समय महायाजक कैफ़ा रहा होगा। एक युवा व्यक्ति को आमतौर पर महायाजक तक पहुँचने में अधिक परेशानी होगी। लेकिन गलातियों 1.14 को याद रखें, शाऊल अपने साथियों के बीच आगे बढ़ रहा है।

22.3, कि वह गमलीएल का छात्र है, यह दर्शाता है कि वह एक धनी परिवार से है। इसलिए, यह तथ्य कि वह एक हेलेनिस्ट था, वास्तव में उसके खिलाफ़ ज़्यादा मायने नहीं रखेगा। मेरा मतलब है, मुख्य पुजारी, आप कब्र के शिलालेखों को देखें, कब्र के शिलालेख अक्सर ग्रीक में होते हैं।

वे पूर्वी भूमध्यसागरीय दुनिया की व्यापक यूनानी संस्कृति को महत्व देते थे। महायाजक का सम्मान फिलिस्तीन के बाहर, यहूदिया और गलील के बाहर यहूदी समुदायों द्वारा किया जाता था। महायाजक के पास अब आवश्यक रूप से मैकाबीन काल की तरह प्रत्यर्पण का अधिकार नहीं था।

वह हर चीज़ पर अकेले शासन नहीं कर रहा था, लेकिन महायाजक का सम्मान किया जाता था और यदि संभव हो तो प्रवासी सभास्थल उसके साथ सहयोग करने में प्रसन्न होंगे। अध्याय नौ के श्लोक दो में भी हम मार्ग के बारे में पढ़ते हैं। दिलचस्प बात यह है कि शाऊल वास्तव में दमिश्क के रास्ते पर यात्रा कर रहा है।

यह एक अनुच्छेद में कहा गया है, उसी ग्रीक शब्द होडोस का उपयोग करता है, वह होडोस। लेकिन वाक्यांश, रास्ता, निश्चित रूप से, यहूदी ज्ञान ने मूर्खता के रास्ते के विपरीत सत्य के रास्ते और धार्मिकता के रास्ते की बात की और इसी तरह। एस्सेन्स ने दावा किया कि उन्होंने दिव्य मार्ग का प्रचार किया, सही रास्ता जिस पर आपको चलना चाहिए।

और निस्संदेह, जॉन बैपटिस्ट प्रभु के मार्ग की घोषणा करते हुए आए, नए पलायन के लिए रास्ता सीधा करें। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इस आंदोलन को रास्ता कहा गया। संयुक्त राज्य अमेरिका में, हम वास्तव में अपने चर्चों को यह नाम नहीं दे सकते क्योंकि एक पंथ ने इसके बजाय उस नाम को अपना लिया है।

लेकिन किसी भी मामले में, वह एक चुना हुआ नाम था जिसे प्रारंभिक ईसाई आंदोलन ने अपने लिए इस्तेमाल किया था। एस्सेन्स ने इसे अपने लिए भी उपयोग करने की सराहना की होगी। वह दमिश्क जा रहा है।

अब यह एक लंबी यात्रा है। यह यरूशलेम से 135 मील या 220 किलोमीटर उत्तर में है। इस अवधि में औसत यात्री को पैदल यात्रा करने में संभवतः छह दिन लगेंगे।

दमिश्क में कई एस्सेन्स थे, जब तक कि दमिश्क दस्तावेज़ में प्रतीकात्मक रूप से इसका अर्थ नहीं है, हो सकता है, इस पर थोड़ी बहस हो। लेकिन किसी भी मामले में, यह दमिश्क में आराधनालयों की बात करता है। इनमें से अधिकांश एस्सेन्स नहीं रहे होंगे, लेकिन दमिश्क में आराधनालय थे।

जाहिर है, यह आराधनालय बहुवचन है। आप इन सभी को प्राचीन वास्तुकला में उपयोगी ज्ञात किसी भी माध्यम से एक आराधनालय में फिट नहीं कर सकते। जोसेफस के अनुसार, वहां 20,000 से अधिक यहूदी लोग रहते थे।

तो, आपको अनेक आराधनालयों की आवश्यकता थी। वास्तव में, जोसेफस हमें बताता है कि वर्ष 66 में वहां 18,000 यहूदियों का नरसंहार किया गया था। इसलिए, उनके पास एक बड़ा यहूदी समुदाय था।

पॉल पैदल गया या नहीं? खैर, यह एक प्रश्न है। यदि वह घोड़े पर जाता तो पूरे छह दिन नहीं लगते। यह बहुत जल्दी होता।

लेकिन अध्याय नौ और पद तीन में, शाऊल और उसके साथी स्वर्ग से आने वाली रोशनी से चकित हो जाते हैं। और हम पहले ही ईश्वर के स्वयं को सिनाई पर्वत पर प्रकट होने के बारे में पढ़ चुके हैं। प्रेरितों के काम अध्याय सात में स्तिफनुस इसके बारे में बात करता है।

खैर, स्वर्ग से आने वाली इस रोशनी को शकीना, भगवान की उपस्थिति, भगवान की महिमा के रूप में समझा जाएगा। और यह थियोफ़नीज़ में कई बार होता है, जिसमें ईश्वरीय आह्वान के साथ आने वाली थियोफ़नी भी शामिल है। यह निर्गमन अध्याय तीन में, जलती हुई झाड़ी में घटित होता है।

यह यशायाह अध्याय छह में होता है, जहां यशायाह प्रभु की महिमा को देखता है। यह यहेजकेल अध्याय एक में होता है। इनमें से प्रत्येक मार्ग में एक दिव्य आह्वान है।

यह हर मामले में रिपोर्ट नहीं किया जाता है। यह यिर्मयाह के मामले में रिपोर्ट नहीं किया गया है, बिल्कुल गिदोन के मामले में नहीं। हालाँकि गिदोन के मामले में और मानोह के मामले में, न्यायाधीश छह और न्यायाधीश 13 में, देवदूत कुछ दिलचस्प, आश्चर्यजनक, शानदार चीजें करता है।

लेकिन वैसे भी, अध्याय नौ और श्लोक तीन में, यह थियोफनी से जुड़ा है। वास्तव में, ल्यूक ऐसे दर्शकों से भी अपेक्षा करेगा जो पुराने नियम को नहीं जानते थे, हालाँकि वह अपने दर्शकों से अपेक्षा करता है कि वे पुराने नियम को काफी हद तक जानते हों, लेकिन ऐसे दर्शक भी जो पुराने नियम को नहीं जानते थे वे भी पहचान लेंगे कि यह क्या है क्योंकि यीशु के समय 'जन्म, प्रभु की महिमा चरवाहों के चारों ओर चमकती है जब उन्हें यीशु के जन्म की घोषणा की जाती है। और इस बिंदु पर, शाऊल को जानना चाहिए और उसके साथियों को जानना चाहिए कि यह प्रभु है।

यह भगवान है। लेकिन शाऊल को इसे निगलने में कठिनाई हो रही है। तो, अध्याय नौ और श्लोक चार में, वह जमीन पर गिर जाता है।

खैर, यह पुराने नियम और यहूदी साहित्य दोनों में दैवीय या दिव्य रहस्योद्घाटन में आम बात थी। आप इसे डैनियल में स्वर्गादूतों के साथ कई बार पाते हैं। वह जमीन पर गिर जाता है।

शाऊल, शाऊल, उसका नाम दोगुना हो गया है। ऐसा क्यों? उत्पत्ति 22:11, इब्राहीम, इब्राहीम प्रभु का दूत है क्योंकि प्रभु का दूत उसे बुलाता है। और उत्पत्ति के अध्याय 46 और पद दो में, याकूब, याकूब, जैसा कि प्रभु एक रात के दर्शन में उससे बात करते हैं।

निर्गमन अध्याय तीन और श्लोक चार, मूसा, मूसा अपने बुलावे पर। पहला शमूएल अध्याय तीन और पद 10, शमूएल, शमूएल। इसलिए कभी-कभी जब भगवान बोलते थे और उनके पास कहने के लिए कुछ बहुत महत्वपूर्ण बात होती थी, तो नाम दोगुना हो जाता था।

और इनमें से कुछ मामले बहुत अच्छे मामले थे। तो, शाऊल शायद किसी अच्छी चीज़ की उम्मीद कर रहा था, भले ही वह गिर गया, ठीक है, या तो अपने घोड़े से गिर गया या अपने पैरों से गिर गया। लेकिन यीशु कुछ भी अच्छा नहीं कहते।

बिल्कुल। वह कहता है, हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है? शाऊल, वह यहोवा को कैसे सता सकता है? वह भगवान पर अत्याचार कैसे कर सकता है? लेकिन याद रखें कि यीशु ने ल्यूक के पहले खंड, ल्यूक अध्याय 10 और पद 16 में क्या कहा था। यदि वे आपको अस्वीकार करते हैं, तो वे मुझे भी अस्वीकार करते हैं।

वे तुम्हें प्राप्त करते हैं, वे मुझे प्राप्त करते हैं। शाऊल यीशु के अनुयायियों पर अत्याचार करता रहा है। इसलिए वह यीशु पर अत्याचार कर रहा है।

जब हम प्रभु के नाम का उद्घोष करते हैं तो वे हमारे साथ जो करते हैं, वही वे प्रभु के साथ करते हैं। वास्तव में, पॉल ने बाद में स्वयं ऐसा कुछ कहा, जब कुरिन्थियों, उनमें से कुछ, उसके प्रतिद्वंद्वियों की ओर प्रेरित हो रहे थे जो झूठे सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं। और पॉल कहते हैं, आप जानते हैं, मसीह के राजदूत के रूप में, हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप ईश्वर से मेल-मिलाप करें।

और इस संदर्भ में, मूल रूप से, वह कह रहे हैं, ईश्वर से मेल-मिलाप करने के लिए आपको हमारे साथ मेल-मिलाप करने की आवश्यकता है, क्योंकि हम आपके लिए ईश्वर के एजेंट हैं। खैर, इसका बहुत आसानी से दुरुपयोग किया जा सकता है। लोगों ने उसका बहुत दुरुपयोग किया है।

और हम सावधान रहना चाहते हैं कि ऐसा कभी न करें। लेकिन ऐसा कहने के बाद, आप जानते हैं, जब हम मसीह के लिए बोलते हैं, जब हम लोगों को मसीह के बारे में बता रहे हैं, हम उनके एजेंटों के रूप में, उनके प्रतिनिधियों के रूप में कार्य करते हैं। खैर, शाऊल अब उलझन में है।

वह स्पष्ट को स्वीकार नहीं करना चाहता। आप कौन हैं प्रभु? यह एक स्पष्ट थियोफनी है, लेकिन पॉल भगवान को कैसे सता सकता है? और इसलिए, आप जानते हैं, भगवान कुरिया, यह एक सम्मानजनक शीर्षक है, लेकिन इसका प्रयोग शब्दार्थ में किया जाता है, प्रत्यक्ष संबोधन के रूप में उपयोग किया जाता है, निर्देशक में कुरिया कुरिया को संबोधित करता है। इसका मतलब सर हो सकता है, लेकिन इसका मतलब कुछ मजबूत भी हो सकता है।

इसका मतलब भगवान हो सकता है। इसका अर्थ दिव्य भगवान हो सकता है। तो, आप जानते हैं, क्या यह भगवान है? क्या यह कोई देवदूत है? यहां क्या हो रहा है? और यीशु अध्याय छह में उत्तर देते हैं, ठीक है, यीशु उत्तर देते हैं, मैं यीशु हूं जिसे तुम सता रहे हो।

लेकिन श्लोक छह में, वह कहते हैं, दमिश्क में जाओ और तुम्हें वहां और अधिक निर्देश मिलेंगे। यह आपको बताएगा कि आपको क्या करना चाहिए। और ग्रीक में, आपको क्या करना चाहिए की यह भाषा वास्तव में 237 में हमारे पास भी है जहां भीड़ कहती है, बचाए जाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? और पतरस कहता है, मन फिराओ।

या अध्याय 16 के श्लोक 30 में, मुझे बचाए जाने के लिए क्या करना चाहिए? फ़िलिपियन जेलर पूछता है। खैर, पॉल यह पता लगाने वाला है कि उसे क्या करना चाहिए। यीशु को प्रभु के रूप में स्वीकार करने के लिए उसे जो करना चाहिए वह उस मिशन को अपनाना है जो ईश्वर ने उसके लिए रखा है।

श्लोक आठ में, उसे पता चलता है कि वह अंधा हो गया है। अब परमेश्वर ने कभी-कभी किसी बुरे उद्देश्य को रोकने के लिए लोगों को अंधा कर दिया था। उत्पत्ति अध्याय 19 और श्लोक 11 में याद रखें, सदोम के लोग अंधे हैं।

दूसरे राजा के अध्याय छह में, पूरी सेना अंधी हो जाती है और एलीशा उन्हें कहीं और ले जाता है। कम से कम वे इस मामले में अंधे हो गए हैं कि उनका परिवेश वास्तव में कैसा है। और एलीशा उन्हें एक ऐसे स्थान पर ले जाता है जहां उन्हें पकड़ लिया जाता है और फिर लंबे समय में उद्देश्य उनके लिए परोपकारी होते हैं।

लेकिन यह संभवतः ल्यूक अध्याय एक में जकर्याह को मूक बनाए जाने के समान है। सिवाय इसके कि जकर्याह एक अपूर्ण, लेकिन अच्छा चरित्र वाला व्यक्ति था। और शाऊल का इस समय बुरा चरित्र रहा है।

यह सोचकर कि वह ईश्वर की इच्छा पूरी कर रहा है, लेकिन वह स्पष्ट रूप से गलत था। वह श्लोक नौ के अनुसार तीन दिन का उपवास करता है। उपवास के लिए तीन दिन असामान्य नहीं थे, लेकिन पानी के बिना, यह निर्जलीकरण का कारण बनता था, खासकर दुनिया के बहुत शुष्क क्षेत्र में।

यहूदी धर्म में, इसे अक्सर शोक या पश्चाताप के साथ जोड़ा जाता था। वैसे, आमतौर पर आप पानी के बिना तीन दिन का उपवास नहीं करना चाहेंगे। पानी के बिना लंबे समय तक उपवास करना वास्तव में आपकी किडनी के लिए खतरनाक है।

हालाँकि परमेश्वर ने मूसा वगैरह के लिए चमत्कार किया। लेकिन किसी भी मामले में, ऐसे लोग थे जिन्होंने ऐसा किया और शाऊल ने इस मामले में ऐसा किया। मेरा मतलब है, यह जीवन और मृत्यु है।

वह इस पर विश्वास नहीं कर सकता, लेकिन उसे विश्वास करना होगा कि वह गलत पक्ष में है। उसने सोचा कि वह भगवान की सेवा कर रहा है। उसने सोचा कि वह टोरा की सेवा कर रहा है।

और उसे पता चलता है कि मूल रूप से वह जो कुछ भी मानता है उस पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। इसलिए यहूदी धर्म में, उपवास का प्रयोग अक्सर शोक या पश्चाताप के लिए किया जाता था। उसके पास सचमुच पश्चाताप का कारण है।

आमतौर पर नए नियम में, इसे प्रार्थना के साथ जोड़ा जाता है और वह यही कर रहा है। और हमें बाद में पता चला कि उसे भी कोई स्वप्न आया था। हमें इसका पता इसलिए नहीं चला क्योंकि ल्यूक को इसका वर्णन करना था।

वह बस हमें बताता है; वह हमें यह बताते हुए सूचित करता है कि अनन्या को यीशु ने बताया था कि शाऊल के पास एक था। अध्याय नौ, श्लोक 10 से 19 तक। हम अनन्या के मिशन के बारे में पढ़ते हैं।

खैर, यीशु ने हनन्याह को बुलाया और हनन्याह ने बहुत सम्मानपूर्वक, बहुत आज्ञाकारी ढंग से उत्तर दिया। आप जानते हैं, मैं यहाँ हूँ, पुराने नियम पर, हिनेनी। 1 शमूएल अध्याय तीन, श्लोक 10, आप जानते हैं, प्रभु शमूएल और एली को बुला रहे हैं, पुजारी कहते हैं, ठीक है, ठीक है, अंततः, एली ने इसका पता लगा लिया।

यह प्रभु लड़के को बुला रहा है और वह कहता है, अगली बार जब तुम कहोगे, प्रभु बोलो, तो तुम्हारा सेवक सुनेगा। तो, वह जाकर लेट जाता है और प्रभु उसे तीसरी बार फिर से बुलाते हैं। और शमूएल कहता है, मैं यहाँ हूँ।

या यशायाह उसके बुलावे पर। मैं यहाँ हूँ। मैं यहाँ हूँ। अनन्या बहुत आज्ञाकारी होगी।

वह बहुत खुश है कि यीशु उसे दर्शन दे रहे हैं। और फिर उसे उसके निर्देश मिलते हैं। आपको टार्सस के शाऊल जाना है।

ओह, एक मिनट रुको. मैंने इस शाऊल के बारे में सुना है। अब यह शाऊल है, आप जानते हैं, यीशु शाऊल को दिखाई देता है, और शाऊल सबसे पहले ऐसा दिखता है, आप कौन हैं? अब वह हनन्याह के सामने प्रकट होता है और हनन्याह कहता है, मुझे नहीं पता कि यह एक अच्छा विचार है।

मैंने सुना है कि वह यहाँ हम पर अत्याचार करने आया है। खैर, यह उसका काम नहीं है। यदि प्रभु आपको निर्देश देते हैं, भले ही यह आपको परेशानी में डालने वाला हो, तो आपको ऐसा करना होगा।

लेकिन प्रभु कहते हैं कि वह मेरे सम्मान के लिए चुना हुआ जहाज है। और यह कुछ ऐसा है जिसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में तीन बार दोहराया जाएगा। एक स्थान पर, पॉल इसे संक्षिप्त तरीके से बता सकता है और हनन्याह की भागीदारी को छोड़ सकता है, लेकिन जब वह प्रेरितों के काम अध्याय 22 में यरूशलेम की भीड़ से बात कर रहा होता है, तो उसे हनन्याह का उल्लेख करना निश्चित रूप से उचित होता है, जो कानून के अनुसार धर्मनिष्ठ व्यक्ति है।

प्रभु सीधे शाऊल को अपनी बात कहते हैं और इसका वर्णन कुछ स्थानों पर किया गया है। कुछ स्थानों पर यह वर्णन किया गया है कि वह हनन्याह के माध्यम से शाऊल को बुलाता है। शाऊल इसे एक से अधिक दिशाओं से प्राप्त करता है।

मेरा मतलब है, भगवान स्पष्ट रूप से उसे चाहते हैं और भगवान कई तरीकों से इसकी पुष्टि करते हैं। तो वैसे भी, हनन्याह आज्ञाकारी है। अब वह कहता है कि यीशु कहता है कि शाऊल स्ट्रेट स्ट्रीट पर यहूदा के साथ रह रहा है।

यहूदी संस्कृति आतिथ्य सत्कार पर अत्यधिक बल देती थी। पूरे भूमध्यसागरीय विश्व में इस पर जोर दिया गया। इस पर कई अध्ययन हुए हैं, कोएनिग और आर्टेबेरी और अन्य।

आतिथ्य सत्कार पर बहुत अधिक जोर, यहूदी आतिथ्य सत्कार, और भी अधिक। इसलिए, यदि कोई यात्रा करने वाला यहूदी आपके क्षेत्र में आता है और आप यहूदी हैं, तो आप शायद उन्हें अपने साथ ले लेंगे, खासकर यदि उनके पास अनुशंसा पत्र हों। और यदि उनके पास महायाजक की सिफ़ारिश के पत्र हों, तो आप निश्चित रूप से उन्हें अंदर ले जाना चाहेंगे।

इसलिए, हम नहीं जानते कि यहूदा आस्तिक था या नहीं। अधिक संभावना है कि वह इस समय आस्तिक नहीं है, कम से कम शाऊल के उसके पास आने से पहले तो नहीं। स्ट्रेट स्ट्रीट, शायद, ठीक है, कई विद्वान सोचते हैं कि यह दमिश्क से होकर गुजरने वाली लंबी ईस्ट वेस्ट स्ट्रीट है।

दमिश्क एक अत्यंत प्राचीन नगर था। इस अवधि तक कुछ चीजों को ग्रीड पर चीजों के निर्माण के ग्रीक तरीके के अनुसार अद्यतन किया गया है। लेकिन स्ट्रेट स्ट्रीट शायद ईस्ट वेस्ट स्ट्रीट रही होगी।

और यह उस परंपरा के अनुरूप होगा जो कि सड़क को ध्यान में रखते हुए है। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि निर्देश दिये जा रहे थे। इसलिए, वह जानता था कि उसे कहां ढूंढना है, जैसे कॉर्नेलियस ने कुछ निर्देश दिए थे कि बाद में साइमन टात्रर के घर में पीटर को कहां पाया जाए।

टार्सस, टार्सस का शाऊल। हम टार्सस के बारे में क्या जानते हैं? टार्सस एक बहुत ही महत्वपूर्ण नगर था। और आश्चर्य की बात नहीं है, पॉल ने बाद में कहा, मैं किसी महत्वहीन शहर का नागरिक नहीं हूँ, जो यह कहने का एक अच्छा तरीका था कि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण शहर है।

वह था। यह किलिकिया की राजधानी थी। यह समृद्ध था।

इसके व्यापारियों के प्रतिनिधि प्राचीन भूमध्यसागरीय दुनिया के कई अन्य शहरों में थे। यह एक प्रमुख विश्वविद्यालय केंद्र भी था, विशेषकर दर्शनशास्त्र के लिए। तो यह इस बात पर निर्भर करता है कि जब पॉल वहां से निकला था तब उसकी उम्र क्या थी, वह शायद बहुत छोटा था, लेकिन वह किस उम्र में वहां से निकला था, इस पर निर्भर करते हुए, उसे, कम से कम उसके परिवार को, सड़कों पर यह सुनने का कुछ अनुभव हुआ होगा।

वहां एक बड़ा यहूदी समुदाय भी था, जो विशेष रूप से प्रासंगिक है। अतः हनन्याह को जाना है और उसने सुना है कि शाऊल ने भी एक दर्शन देखा है। खैर, युग्मित दर्शन बहुत आम थे।

दरअसल, प्राचीन दुनिया में युग्मित दर्शन बहुत ही असामान्य थे। लेकिन जब आपके पास कुछ ऐसा होता है जिसे युग्मित दृष्टि के रूप में वर्णित किया गया था, जैसे शायद टोबिट की पुस्तक में, तो यह दिव्य समन्वय की पुष्टि करता है। ये कोई दुर्घटना नहीं थीं।

और यह भी कोई दुर्घटना नहीं है कि हमारे पास ये दो अध्याय एक पंक्ति में हैं। आपके पास शाऊल और हनन्याह दोनों के साथ युग्मित दर्शन हैं। यह कोई संयोग नहीं हो सकता।

मेरा मतलब है, अगर एक व्यक्ति के पास यह है, तो शायद वे मतिभ्रम कर रहे हैं। दो लोगों के पास यह स्वतंत्र रूप से है। यह अनेक पुष्टि है।

प्रेरितों के काम अध्याय 10 में, कुरनेलियुस और पतरस ने उसी प्रकार दर्शनों का समन्वय किया है। इसलिए हनन्याह ने एक बेतुके आदेश पर अपनी आपत्ति जताई, मूसा के विपरीत नहीं, जिसने मिस्र जाने और लोगों को मुक्त कराने के परमेश्वर के आदेश पर अपनी आपत्ति जताई। लेकिन उसने शाऊल को छंद 15 और 16 भेजे जो पुराने नियम के आह्वान या कमीशनिंग कथाओं से मिलते जुलते हैं।

और फिर श्लोक 17 में, वह कहता है, भाई शाऊल, संभवतः आलंकारिक रिश्तेदारी भाषा। वे वास्तव में आवश्यक रूप से निकट रूप से संबंधित नहीं थे। आप इसका उपयोग साथी यहूदियों के लिए कर सकते हैं।

और आप इसे कभी-कभी ल्यूक-एक्ट्स में पाते हैं। आप इसे ट्रेड गिल्ड के साथी सदस्यों या ऐसी किसी चीज़ के लिए उपयोग कर सकते हैं। हालाँकि, यहाँ इसका मतलब संभवतः साथी आस्तिक है।

और यह उल्लेखनीय है क्योंकि अनानियास इस आंदोलन से संबंधित है जो दमिश्क जैसी जगहों पर बिखरा हुआ है क्योंकि टार्सस का शाऊल उन पर अत्याचार कर रहा है। और अब वह उसे एक साथी विश्वासी के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार है। और सुसमाचार इसी प्रकार है, कि हम लोगों से प्रेम कर सकते हैं।

हम मानते हैं कि हम सभी को अनुग्रह द्वारा और केवल अनुग्रह द्वारा ही बचाया गया है। और हम इसका बहुत सारा हिसाब दे सकते हैं, दोनों तरफ के लोगों का, जिन लोगों के साथ हमने अन्याय किया था। मुझे याद है जब मैं नास्तिक था तो ईसाइयों का मज़ाक उड़ाता था।

और मेरे रूपांतरण के बाद, वापस जाकर मैंने उन ईसाइयों में से कुछ को ढूँढा जिनका मैंने मज़ाक उड़ाया और कहा, आप जानते हैं, मैं कितना गलत था। आप बिल्कुल सही थे। और वे मुझे प्रभु में भाई के रूप में पाकर बहुत प्रसन्न थे।

तो, बहुत दयालु. हालाँकि इसकी खबरें भी थीं, जो लोग ईसाइयों पर हमला करने की योजना बना रहे थे, उन्हें रात में एक दर्शन द्वारा परिवर्तित कर दिया गया था। और फिर उन्हें ईसाइयों में शामिल होना पड़ा और खुद ईसाइयों के पास भागना पड़ा क्योंकि उनके अपने सहयोगी उन्हें मारना चाहते थे।

तो वह कहता है, प्रभु ने मुझे तुम पर हाथ रखने के लिये भेजा है, कि तुम आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ, और दृष्टि प्राप्त करो। जाहिर है, उसे प्रभु के वचन बोलने के अपने मिशन के लिए भावना से भरना होगा। और हम बहुत जल्द ही यह देखने जा रहे हैं कि कुछ छंदों के बाद उनका मिशन क्या शुरू कर रहा है।

वह पहले से ही उपदेश देना शुरू कर रहा है। लेकिन श्लोक 18 कहता है कि उसकी आँखों से परछाइयाँ गिर गईं। खैर, यह टोबिट की किताब की भाषा को याद दिलाता है जहाँ टोबिट को अंधा कर दिया गया था और जब वह ठीक हो गया था तो उसकी आँखों से पर्दा गिर गया था।

और उसका बपतिस्मा हुआ। खैर, ऐसे बहुत से स्थान थे जहाँ उसे बपतिस्मा दिया जा सकता था। जिन स्थानों पर उनका बपतिस्मा हो सकता था उनमें से एक बरदा नदी थी, जो दमिश्क से होकर बहती है और उस स्थान के निकट थी जहाँ परंपरा कहती है कि स्ट्रेट स्ट्रीट थी।

अध्याय 9 श्लोक 19 से 31, जहाँ हम दमिश्क और यरूशलेम में टकराव के बारे में पढ़ते हैं। और दमिश्क और यरूशलेम में शाऊल के प्रति हमारी समानांतर प्रतिक्रियाएँ हैं। समानांतर बातें बताई जाती हैं।

वह उपदेश देना शुरू कर देता है, लोग उसे मारना चाहते हैं, और शिष्यों को उसे भेजना पड़ता है क्योंकि वह अपने विश्वास के बारे में बहुत मुखर है। वह नहीं जानता कि इस बारे में कैसे चुप रहा जाए। हमें ऐसे ही लोगों की ज़रूरत है।

लेकिन शायद हमें उन्हें विदा करने के लिए भी लोगों की ज़रूरत है ताकि वे समय से पहले शहीद हो जाएं। दोनों मूल्यवान हो सकते हैं। लेकिन सच्चाई के प्रति उत्साह रखने वाले लोगों के लिए भगवान का शुक्रिया अदा करें।

किसी भी स्थिति में, दमिश्क में यीशु के पहले उपदेश में शाऊल की प्रतिक्रिया ल्यूक अध्याय 4 में यीशु के शुरुआती संदेश की प्रतिक्रिया के समान है। अब, अधिनियमों में यह कहा गया है कि यह सब कई दिनों के बाद हुआ। ल्यूक वास्तव में हमें यह नहीं बताता कि यह कितने दिन का था। संभवतः उसे पता नहीं था।

ऐसा नहीं है कि पॉल ने उसे सब कुछ बता दिया। पॉल ने उसे हर विवरण का सिलसिलेवार ब्यौरा नहीं दिया होगा। ल्यूक ने शायद यह सब ठीक-ठीक तब नहीं लिखा जब वह पॉल के साथ था।

ऐसा मेरा अनुमान है। लेकिन यह भी संभव है कि ल्यूक इसमें शामिल नहीं होना चाहता था। यह उनके मुख्य बिंदु से अलग था।

ल्यूक उस यहूदी विरोध पर जोर देना चाहता है जिसका पॉल ने दमिश्क में सामना किया था, न कि विशेष रूप से नबातियन विरोध पर। गलातियों से हम जानते हैं कि पॉल ने प्राचीन भाषा में तीन साल बिताए, कम से कम तीन साल का कुछ हिस्सा। तो, यह डेढ़ साल से लेकर तीन साल तक कहीं भी हो सकता था।

अरब में, नबातियन अरब वह क्षेत्र था जहाँ नबातियन रहते थे। इसमें डेकापोलिस भी शामिल था। संभवतः इस काल में दमिश्क शामिल नहीं था, हालाँकि यह बहस का विषय है क्योंकि कुछ सिक्के गायब हैं।

हम ठीक से नहीं जानते कि इस समय दमिश्क पर किसने नियंत्रण किया। लेकिन हम 2 कुरिन्थियों 11:32 में नबातियन एथनार्क के बारे में पढ़ते हैं, जो संभवतः दमिश्क में नबातियन व्यापारिक समुदाय का मुखिया रहा होगा। नबातियन अरबों के क्षेत्र में रहने के लिए आपको दमिश्क से बहुत आगे जाने की ज़रूरत नहीं थी।

बेशक, गलातियों में पॉल के पास इस पर जोर देने का एक कारण है क्योंकि वह अध्याय 4 में अरब में माउंट सिनाई के बारे में बात करने जा रहा है। पॉल हमें यह नहीं बताता कि उसने गलातियों अध्याय 1 में अरब में क्या किया, लेकिन उसने शायद कुछ बनाया है लोग पागल। अब जब मैं फिर से अरब कहता हूँ, तो यह नबातियन अरबों का क्षेत्र है। यह सीरियाई दमिश्क है, अरब प्रायद्वीप में बाद का दमिश्क नहीं, हालाँकि नबातियन अरब भी वहाँ थे।

लेकिन इसमें यह नहीं बताया गया है कि शाऊल ने क्या किया, लेकिन संभवतः इसका कम से कम एक हिस्सा कुछ उपदेश था क्योंकि 2 कुरिन्थियों अध्याय 11 के अनुसार, स्पष्ट रूप से

नबातियन जातीय समूह उससे नाराज था। लोग चीजों का समन्वय कर सकते थे। मेरा मतलब है, नबातिया में बहुत सारे यहूदी लोग रहते थे, पेरिया में बहुत सारे नबातियन रहते थे, जो गैलील के टेटार्क, हेरोदेस एंटीपास के अधिकार क्षेत्र में था।

इसलिए, उनके बीच बहुत सारे रिश्ते थे। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उन्होंने मिलकर काम किया होगा। लेकिन पॉल ने 2 कुरिन्थियों 11 में विशेष रूप से नबातियन विरोध का उल्लेख किया है।

ल्यूक यहूदी विरोध पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं, जो उनके इस विषय पर फिट बैठता है कि जिन लोगों के पास सबसे अधिक अवसर था, उन्होंने इसकी सबसे अधिक उपेक्षा की, और हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हम आज भी ऐसा न करें। लेकिन यह विचार कि उन्होंने एक साथ काम किया होगा, आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि बाद में भी, पॉल सबसे पहले यहूदी समुदाय में जाते हैं। खैर, इससे नबातिया में यहूदी लोगों को समझ में आ गया होगा कि वह भी सबसे पहले वहीं गया होगा।

लेकिन किसी भी स्थिति में, वह दमिश्क में वापस आ गया है। गलातियों ने उसके दमिश्क के पास परिवर्तित होने और दमिश्क से भागने के बारे में भी बात की है, हमारे पास 2 कुरिन्थियों 11 में है। तो इसमें से कुछ को हमने वास्तव में अपने स्वयं के अनुभव के बारे में पॉल के पत्रों द्वारा प्रमाणित किया है।

किसी भी मामले में, पॉल को दमिश्क और फिर यरूशलेम में समानांतर प्रतिक्रियाओं का अनुभव होता है, जहां वह कहता है कि उसने वहां से प्रचार करना शुरू किया। यहीं वह इसे रोमियों 15 में गिनता है क्योंकि यरूशलेम उस स्थान का प्रमुख केंद्र है जहां से सुसमाचार को आगे बढ़ना है जैसा कि अधिनियम 1:8 में है। तो, 9:22 में, शाऊल पहले से ही धर्मग्रंथों का विशेषज्ञ था। और देखो, उसके पास ये पत्र थे।

तो, आप उम्मीद कर सकते हैं कि आराधनालयों में उसका स्वागत किया जाएगा। शास्त्रों में उनकी विशेषज्ञता, शास्त्रों में उनका प्रशिक्षण, शायद तृतीयक स्तर का प्रशिक्षण। प्राचीन काल में अधिकांश लोगों के पास यदि कोई प्रशिक्षण होता था, तो वह प्राथमिक स्तर का होता था।

कम संख्या में माध्यमिक प्रशिक्षण प्राप्त था। केवल उच्चतम स्तर, सबसे अधिक संसाधनों वाले लोगों को ही तृतीयक स्तर का प्रशिक्षण मिला। वह सेप्टुआजेंट, पुराने नियम का ग्रीक अनुवाद, आगे और पीछे जानता था।

खैर, भगवान अक्सर हमारी पृष्ठभूमि के कुछ हिस्सों का उपयोग करते हैं। वह हमेशा ऐसा नहीं करता, लेकिन वह अक्सर करता है। यीशु ल्यूक अध्याय पाँच में कहते हैं, यीशु शिष्यों को मछुआरे कहते हैं।

मार्क अध्याय एक, मैथ्यू अध्याय चार। जो शिष्य मछुआरे थे वे लोगों के मछुआरे बन गये। और मूसा और दाऊद चरवाहे थे।

खैर, उन्हें लोगों का चरवाहा बनने के लिए तैयार करने का अच्छा अनुभव था। तो, इस मामले में, भगवान अपनी पृष्ठभूमि के सकारात्मक पहलुओं का उपयोग करता है। खैर, अंततः एक साजिश है जिसके बारे में शाऊल को पता है।

यह बहुत आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि प्राचीन काल में कथानक आमतौर पर लीक हो जाते थे। रोमन सीनेट के भीतर रची गई साजिशें लीक हो गईं। महासभा से कथानक लीक हो गए।

वास्तव में, जोसीफस, महासभा में कुछ लोग जोसीफस के खिलाफ साजिश के साथ काम कर रहे थे। जोसेफस का कहना है कि उसके एक दोस्त ने इसके बारे में सुना और आकर उसे इसके बारे में बताया। तो, वह तैयार था।

इसलिए अक्सर भूखंडों के बारे में खबर फैलती थी, लेकिन लोग दिन-रात फाटकों पर नजर रखते थे। रात को द्वार बंद कर दिये गये। गेट का क्षेत्र काफी चौड़ा हो सकता था, लेकिन रात में गेट बंद कर दिए जाते थे।

तो इससे बाहर निकलने वालों को द्वारों पर बहुत छोटे, बहुत छोटे निकास तक सीमित कर दिया जाएगा। इसलिए, शाऊल उस तरह से भागने की कोशिश करने की हिम्मत नहीं करता। नबातियन जातीय समूह के लोग उसके खिलाफ हैं।

और ल्यूक के अनुसार, दमिश्क में यहूदी समुदाय, जो काफी बड़ा था, में भी लोग फाटकों पर नजर रख रहे थे। तो, 2 कुरिन्थियों 11:32 और 33 के इस अंश में उल्लेख है कि वह दीवार से बच निकला। घर कभी-कभी शहर की दीवारों में बनाए जाते थे।

अनानियास के घर का पारंपरिक स्थल वास्तव में दीवार पर बने नबातियन क्वार्टर में है। अब वह परंपरा यहां कुछ चीजों को एक साथ रखने से उत्पन्न हुई होगी, लेकिन हो सकता है कि यह वहां के ईसाई समुदाय की कोई चीज़ संरक्षित भी रही हो। अतः उसे टोकरी से एक दीवार में उतार दिया गया।

आमतौर पर खिड़कियाँ, यहाँ तक कि दीवारों पर बने घरों में भी, बहुत ऊँची होती थीं ताकि लोग अंदर न घुस सकें या कुछ और न कर सकें। अब इससे उतना संदेह पैदा नहीं होगा. संभवतः शहर की दीवारों के बाहर भी लोग रहते थे।

अधिकांश शहर दीवारों से परे विकसित हुए, लेकिन वे एक टोकरी को दीवार से नीचे आते हुए देखकर बहुत चौंके नहीं होंगे क्योंकि लोग, आप जानते हैं, किसी चीज़ को इधर-उधर ले जाने की तुलना में यह आसान था। और रात में, आप जानते हैं, खिड़कियाँ बंद थीं। कोई व्यक्ति चीज़ों से भरी टोकरी नीचे कर सकता है।

लेकिन किसी भी मामले में, शाऊल और उसके दोस्तों को यह विचार कहाँ से आया? खैर, इसके लिए बाइबिल की एक मिसाल है। यहोशू 2:15 स्मरण रख, राहाब ने भेदियों को अपने घर में से शहरपनाह पर उतार दिया। 1 शमूएल 19 और आयत 12 में, डेविड उस तकनीक को भी जानता था।

और उसकी पत्नी मीकल ने उसे शहरपनाह पर से नीचे उतार दिया। अध्याय 9, पद 26 और 27. वह यरूशलेम में प्रेरितों के पास गया।

प्रारंभ में, हर कोई उससे डरता था, लेकिन बरनबास वास्तव में... हम अधिनियमों की पुस्तक में भगवान को विभिन्न व्यक्तित्वों का उपयोग करते हुए देखते हैं। बरनबास उस प्रकार का व्यक्ति है जो लोगों तक पहुंचता है, प्रोत्साहन का पुत्र, प्रेरितों ने उसे बुलाया। बाद में, वह अन्ताकिया में ऐसा करता है।

और फिर भी, बाद में, वह जॉन मार्क के साथ ऐसा करना चाहता है। शाऊल मिशन के प्रति इतना उत्साही है कि मिशन सबसे पहले आता है। हमें बरनबास और शाऊल दोनों की आवश्यकता है।

आप जानते हैं, कभी-कभी हम निश्चित समय पर एक-दूसरे के साथ नहीं मिल पाते जैसा कि वहां हुआ था, लेकिन भगवान हमारे संबंधित उपहारों का उपयोग करते हैं। मेरी पत्नी शायद कुछ मायनों में बरनबास की तरह है और मैं पॉल की तरह, लेकिन प्रभु हम दोनों का उपयोग करते हैं और हम एक-दूसरे के पूरक हैं। किसी भी स्थिति में, वह उसके पास पहुंचा, उसने उसका परिचय कराया, उसे ले गया और उसे प्रेरितों से मिलवाया।

खैर, ल्यूक बहुत संक्षिप्त है। पॉल के स्वयं के लेखन हमें बताते हैं कि प्रेरितों के बीच वह वास्तव में केवल पीटर और जेम्स थे, जो इस अवसर पर प्रभु के भाई थे। लेकिन किसी भी मामले में, जो चीजें उसके साथ हो रही हैं, वह हेलेनिस्ट यहूदियों के साथ बहस कर रहा है, वे उसे मौत के घाट उतारना चाहते हैं।

यह वही बात है जो स्टीफन के साथ हुई थी, याद है? शाऊल भी आराधनालय का सदस्य था और अब वे उसे चुप कराना चाहते हैं। इसलिए, वह स्टीफन की तरह ही शहादत के लिए छिपा हुआ प्रतीत होता है। यह कथा में रहस्य पैदा करता है, विशेष रूप से यहां अधिनियमों की पुस्तक में पहली बार, जिन्होंने निस्संदेह पॉल के बारे में सुना था, लेकिन शाऊल के बारे में नहीं सुना होगा।

इसलिए, उन्होंने उसे टार्सस भेज दिया। अब यह पॉल के उस कथन पर फिट बैठता है जिसमें उसने कहा था कि अपने शुरुआती दिनों में, उसने सीरिया के क्षेत्रों में समय बिताया, जिसमें दमिश्क और किलिकिया शामिल थे, जिसमें निश्चित रूप से टार्सस भी शामिल था। इसलिए, उसने टार्सस को भेज दिया।

संभवतः वहां उसके रिश्तेदार हों, कम से कम संभवतः वहां उसके कुछ रिश्तेदार हों। हो सकता है कि उनका परिवार यरूशलेम चला गया हो या उन्होंने उन्हें अभी-अभी वहां भेजा हो, लेकिन हम जानते हैं कि उनका भतीजा बाद में वहीं रहता है। लेकिन संभवतया, या कम से कम संभवतः टारसस में उसके कुछ रिश्तेदार थे, या कम से कम कुछ ऐसे लोग थे जिनके बारे में उसे पता होगा कि वह टारसस में संपर्क में रह सकता है।

वहीं उनका जन्म हुआ था. और वह बहुत समय तक वहीं रहा। यह उन स्थानों में से एक हो सकता है जिसका उसने 2 कुरिन्थियों 11 में वर्णन किया है, जहां उसे आराधनालय में पिटाई का सामना करना पड़ा था।

हम नहीं जानते कि उसे इतनी मार-पीट कहाँ से मिली, लेकिन हम प्रेरितों के काम की पुस्तक से यह जानते हैं कि वास्तव में उसे अन्ताकिया की कलीसिया से बाहर भेजे जाने में काफी समय लगा था। वह अभी तक अन्ताकिया भी नहीं पहुंचा है। उनके रूपांतरण और उनके बुलावे के बाद शायद कई साल लग गए, इससे पहले कि वह वास्तव में अपने मिशन के केंद्र में प्रवेश कर पाए।

इसका मतलब यह नहीं है कि उसने पहले से ही उपदेश देना शुरू नहीं किया था, बल्कि इससे पहले कि वह वास्तव में उस चीज़ की पूर्ति देख पाता जिसके लिए उसे बुलाया गया था या जो उसे करने के लिए बुलाया गया था उसकी पूर्ति की शुरुआत। कभी-कभी आज हमारे पास ऐसे लोग हैं, आप जानते हैं, आपको बुलाया जाता है, आप उत्साही हैं। एक युवा ईसाई के रूप में मैं इसी तरह का था।

मैं सीधे जाकर प्रचार करना चाहता था। मैं ट्रेनिंग नहीं लेना चाहता था. आप जानते हैं, मैं एक दिन में बाइबल के 40 अध्याय पढ़ रहा था, इसलिए मैं बाइबल बहुत अच्छी तरह से सीख रहा था, हालाँकि थोड़ी देर बाद मुझे एहसास होने लगा, हम्म, मुझे कुछ सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की आवश्यकता है।

मैं वास्तव में ग्रीक और हिब्रू वगैरह सीखना चाहूंगा। लेकिन शुरू में, मैं सिर्फ बाहर जाकर प्रचार करना चाहता था। मैं ट्रेनिंग नहीं लेना चाहता था.

हम सभी को प्रशिक्षण तक समान पहुंच नहीं है। सभी प्रशिक्षण समान रूप से उपयोगी या समान रूप से अच्छे नहीं होते हैं। लेकिन मेरा कहना यह है कि कॉल का हमेशा यह मतलब नहीं होता कि आप वह सब कुछ पूरा कर लेंगे जिसके लिए आपको बुलाया गया है।

कॉल आपको एक दिशा देती है. यह आमतौर पर आपको यह भी नहीं बताता कि आपको क्या करने के लिए बुलाया गया है। मैं अभी भी उन कुछ चीज़ों की खोज कर रहा हूँ जो प्रभु ने मुझसे वर्षों पहले कही थीं।

ओह, इसका यही मतलब है. यह एकदम सही समझ में आता है. लेकिन किसी भी मामले में, निराश मत होइए।

यदि कुछ चीज़ें जो प्रभु ने आपको करने के लिए कहा है, आप अभी तक नहीं कर पाए हैं, और आप जानते हैं कि आप वही कर रहे हैं जो प्रभु आपसे कराना चाहते हैं, तो प्रभु के पास अक्सर समय होता है जब वह हमें अलग-अलग तरीकों से तैयार कर रहे होते हैं हमारी कॉलिंग के तरीके. तो, आप जानते हैं कि आप किधर जा रहे हैं, आप वहीं जाते रहते हैं, और सही समय पर आप ऐसा करते हैं। तब तक, ध्यान रखें कि यह आपका काम है और आप इसे करने की तैयारी कर रहे हैं।

इसलिए, जिन लोगों को अपनी बुलाहट पूरी करने के लिए स्कूल या किसी और चीज़ में समय बिताने की ज़रूरत है, उनके लिए यह ठीक है। तो, कथा पॉल और पतरस के बीच आगे-पीछे चलती रहेगी, और यह शेष अध्याय और फिर पूरे अध्याय 10 तक पतरस पर ही टिकी रहेगी। अध्याय 9, पद 32, अध्याय 9 और पद 43 के माध्यम से, हम पीटर के माध्यम से निरंतर होने वाले चमत्कारों के बारे में पढ़ें।

और पीटर फिलिप के नक्शेकदम पर चलता है, उन स्थानों पर जाता है जहां फिलिप ने प्रचार किया है। और वह अध्याय 9 के श्लोक 32 में लिड्डा में समाप्त होता है। अब लिड्डा यरूशलेम से लगभग 25 मील या 40 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में था। इसलिए, वह अब हर समय यरूशलेम में नहीं रह रहा है, भले ही वहां अन्य प्रेरित हों।

यह जोप्पा से लगभग 11 मील, 17.5 किलोमीटर दूर था, ऐसा श्लोक 36 में दिखाई देता है। जोप्पा और लिडा प्रमुख यहूदी तटीय शहर थे। कैसरिया और भी बड़ा तटीय शहर था, लेकिन इसमें अन्यजातियों की संख्या अधिक थी, इसलिए हम इसे विशिष्ट रूप से यहूदी शहर नहीं कहेंगे।

यहूदी निवासी इसे यहूदी कहना चाहते थे। यहूदियों ने कहा, यह हमारा नगर है, और इसी बात पर वे आपस में भिड़ गए। लेकिन जोप्पा और लिडा तट पर यहूदी-नियंत्रित शहर थे।

अध्याय 9 के श्लोक 35 में, शेरोन तटीय मैदान पर है और लिडा तटीय मैदान के दक्षिणी छोर पर है। अब जब वहाँ एक चमत्कार होने के बाद लिडा और शेरोन सभी प्रभु की ओर मुड़े, तो पीटर ने कहा, एनीस, यीशु तुम्हें ठीक करते हैं। और यह आदमी जो बिस्तर पर पड़ा था, ठीक हो गया है।

एनीस, वैसे, निश्चित रूप से, यह इलियड में एक नाम है और इसे ट्रोजन का पूर्वज माना जाता था। क्षमा करें, यह एक ट्रोजन था जो रोमनों का पूर्वज था। लेकिन बहुत से प्रवासी यहूदियों द्वारा बहुत सारे ग्रीक और रोमन नामों का उपयोग किया जाता था।

तो यह बहुत आश्चर्य की बात नहीं है। परन्तु लिडा और शेरोन के सभी, इस तटीय मैदान में, वे प्रभु की ओर मुड़ गये। अब ल्यूक और अन्य लोग कभी-कभी अतिशयोक्ति का उपयोग करते हैं, लेकिन ईसाई उपस्थिति इतनी मजबूत थी कि दूसरी शताब्दी में, पर्यवेक्षकों ने देखा कि लिडा में अभी भी बहुत मजबूत ईसाई उपस्थिति थी।

श्लोक 36 में, जोप्पा, जाफ़ा, आज तेल अवीव है। जोप्पा एक लाभदायक बंदरगाह शहर था। यह कैसरिया से लगभग 30 मील, 48 किलोमीटर दक्षिण में था।

वर्ष छह में सीधे रोमन अधिकार में आने तक यह यहूदियों के नियंत्रण में था। इसलिए, इसका यहूदी नियंत्रण का इतिहास था और इस स्थान पर अभी भी एक मजबूत यहूदी आबादी थी। तबीथा वहाँ थी।

उसे डोरकास भी कहा जाता है। तबीथा चिकारे के लिए सेमेटिक है। डोरकास का ग्रीक में अर्थ गज़ेल है।

तो, वह बस कुछ अलग-अलग भाषाओं में अपने नाम से चल रही है। मेरे ऐसे दोस्त भी हैं जो ऐसा करते हैं। वह उपकारी या हितैषी भी है।

हम पुरातनता और शिलालेखों में महिला संरक्षकों के बारे में जानते हैं। आमतौर पर महिलाओं के पास पुरुषों जितना पैसा नहीं होता था, लेकिन कभी-कभी उनके पास होता था और वे अपना पैसा महत्वपूर्ण कार्यों के लिए दान कर देती थीं या महत्वपूर्ण कार्यों के लिए प्रदान करती थीं। शिलालेखों में प्राचीन काल के लगभग दसवें संरक्षक, कम से कम वर्तमान अनुमान के अनुसार, महिला संरक्षक थे।

हो सकता है कि वह श्लोक 41 में वर्णित विधवाओं की परोपकारी रही हो। वह उनका भरण-पोषण कर रही है और वे सभी उसके लिए शोक मना रहे हैं। उनका बहुत करीबी रिश्ता है।

खैर, वह मर चुकी है और यहूदी मृतकों को दफनाने से पहले हमेशा धोया जाता था। यही रिवाज था। अब महिलाएं या तो पुरुषों की लाशें धो सकती थीं या महिलाओं की।

लेकिन महिलाओं की लाशों को दफनाने के लिए केवल महिलाएं ही तैयार कर सकती थीं। यह आंशिक रूप से यहूदी पुरुष शिक्षकों की महिलाओं के शरीर के प्रति लालसा रखने वाले पुरुषों के प्रति चिंता के कारण था। पद 38 में, वे पतरस को भेजते हैं और चाहते हैं कि वह जल्दी करे।

उसे वास्तव में जल्दी करनी पड़ती है क्योंकि दफनाना आम तौर पर उसी दिन सूर्यास्त से पहले किया जाता था। हनन्याह और सफीरा को याद करो, जिन्हें बहुत जल्द दफनाया गया। दफनाना आम तौर पर उसी दिन सूर्यास्त से पहले होना था, इसलिए यह बहुत जरूरी था।

जोप्पा और लिडा के बीच 11 मील या 17.5 किलोमीटर की दूरी थी। तो यह काफी अच्छी गति से प्रत्येक दिशा में लगभग चार घंटे की यात्रा हो सकती है। इसलिए उन्हें संदेश लाने के लिए उसके पास जाने के लिए जल्दी करनी पड़ती है और मूल रूप से उसे सब कुछ छोड़कर बहुत जल्दी उनके साथ जाना पड़ता है।

श्लोक 39 में, वह वहाँ पहुँचता है। तबीथा को ऊपरी कमरे में रखा गया है। ऊपरी कमरे आमतौर पर छोटे होते थे।

प्रेरितों के काम अध्याय एक में शायद नहीं था, लेकिन आम तौर पर, वे छोटे थे। प्रायः इनका निर्माण सपाट छतों पर किया जाता था। और हमारे पास प्राचीन काल के कुछ अन्य स्रोत हैं जो वहाँ तैयार किए गए शवों के बारे में बात करते हैं।

वास्तव में, पुराने नियम में उत्थान के बारे में कुछ अन्य कहानियों में एक ऊपरी कमरे का भी उल्लेख किया गया है और प्रेरितों के काम अध्याय 20 में यूतुइकस के बड़े होने पर उसके ऊंची मंजिल से गिरने का भी उल्लेख किया गया है। लेकिन संपन्न रोमन मैट्रन के पास नौकरानियां थीं श्लोक 39 में उल्लिखित कुछ चीजों का ध्यान रखना, लेकिन वे यह देखने के लिए अभी भी

जिम्मेदार थे कि यह किया गया था। श्लोक 40 में, जो विधवाएँ विलाप कर रही हैं, वे पतरस को इसकी करुणा दिखा रही हैं, यह पतरस से प्रतिक्रिया आमंत्रित कर रही है।

पद 40 में, पतरस शरीर में चला जाता है। पीटर को कमरे में लाने से पहले शव को ढक दिया गया होगा, लेकिन पीटर ने बाकी लोगों को बाहर भेज दिया, ठीक 2 किंग्स 4.33 की तरह, जहां एलीशा शूनेमाइट्स के बेटे के पालन-पोषण के लिए वहां किसी और को नहीं चाहता है। कांगो में जिन लोगों को हम जानते हैं, उनमें से एक जीन मैबीला है, जो कांगो के इवेंजेलिकल चर्च का एक उपयाजक है, जो मैरी की कहानी बताता है, जो बाहरी इलाकों में से एक थी, और मैरी मलेरिया से मर रही थी।

उसे बुखार था। कितने दिन हो गये थे कुछ खाये-पिये। और इसलिए, वे शव को डोलीज़ ले आए, जो निकटतम बड़ा शहर था, और उसे अस्पताल ले जाने की कोशिश कर रहे थे।

लेकिन जब वह डोलीज़ में थी, तब उसकी मृत्यु हो गई। और उस दिन टैक्सियाँ हड़ताल पर थीं। उसे अस्पताल ले जाने का कोई रास्ता नहीं था और उनके पास किसी भी हालत में उसे अस्पताल ले जाने के लिए पैसे भी नहीं थे।

और इसलिए, उन्होंने सुना कि मामा जीन के घर पर यह प्रार्थना सभा चल रही थी। इसलिए, वे उसे मामा जीन के घर ले आए और वहां उसे एक प्रार्थना चटाई पर लिटा दिया। और मामा जीन की सहायक डेल्फिन ने कहा, इस शरीर को ले जाओ।

यह वह जगह नहीं है। आप यहां शव नहीं ला सकते। यह प्रार्थना का स्थान है।

और मामा जीन ने कहा, नहीं, चलो प्रार्थना करें। उसने महसूस किया कि प्रभु उसे किसी सचमुच नाटकीय चीज़ के लिए लंबे समय से तैयार कर रहा था। और इसलिए, वे शव को अंदर ले आए, और उसने कहा, ठीक है, हर कोई जो इस प्रार्थना समूह का हिस्सा नहीं है, आप उसी मॉडल का पालन करते हुए बाहर जाएं।

और वे बाहर चले गये, परन्तु वे खिड़की में झाँक रहे थे। और इसलिए, उसने कहा, उसका नाम क्या है? और जो लोग खिड़की से झाँक रहे थे उन्होंने कहा, मैरी। और इसलिए, उसे लगा कि उसे मैरी का नाम पुकारना चाहिए क्योंकि वह उसके लिए प्रार्थना कर रही थी।

और मैरी जीवित हो गई और अभी भी जीवित थी, आखिरी बार मैंने सुना था। किसी भी मामले में, इसलिए हमारे पास यहां यह विवरण है जहां एलीशा, यह उसी तरह से किया गया है जैसे एलीशा ने शुनेमिन के बेटे को उठाया था, और कुछ अन्य मामलों में, एलिय्याह ने सारपत के बेटे की विधवा को उठाया था। और विधवा के बेटों की बात करते हुए, आप ल्यूक अध्याय 7 में नहूम के बेटे की विधवा के बारे में भी सोच सकते हैं। मैंने वास्तव में अपने विभिन्न खातों में एक चार्ट बनाया है।

उन सभी में समानताएं नहीं हैं, लेकिन यह देखने के लिए पर्याप्त समानताएं हैं कि ल्यूक, जहां उसके पास उन विवरणों तक पहुंच है जो पुराने नियम के कुछ विवरणों से मेल खाते हैं, उन्हें

रिकॉर्ड करना चाहता है। और निस्संदेह, इनमें से कुछ विवरणों में, पीटर और अन्य लोग स्वयं उनका अनुसरण करना पसंद करेंगे। और जब यीशु ने याइर की बेटी का पालन-पोषण किया तब पतरस उपस्थित था।

जब नहूम के बेटे की विधवा का पालन-पोषण हुआ, तब वह उपस्थित था। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि दूसरी सदी की शुरुआत में एक ईसाई धर्मशास्त्री, क्राइेटस, जब यह लिख रहे थे, तब शायद वह अपने बुढ़ापे में थे, लेकिन वह कहते हैं, हमारे समय में, उनमें से कुछ जिन्हें यीशु ने मृतकों में से जीवित किया था, हमारे समय में जीवित थे। समय। तो, ऐसे समय में जब क्राइेटस जीवित था।

और चूँकि यीशु ने कुछ बच्चों को मृतकों में से जीवित किया, तो यह समझ में आएगा। लेकिन किसी भी मामले में, वह है, पीटर दूसरों को बाहर भेजता है और फिर वह प्रार्थना करता है, और छंद 41 और 42 में, तबीथा उठती है, और फिर वह उसे विधवाओं के सामने जीवित प्रस्तुत करता है, जैसे 1 राजा 17 में, एलिय्याह बच्चे को प्रस्तुत करता है सारपत की विधवा. और 2 राजा 4 में, एलीशा ने बच्चे को शूनेमिन स्त्री को सौंप दिया।

और लूका 7, पद 15 में, यह तेरे पास नहूम के पुत्र की विधवा के पास है। ठीक है, इसके बाद, हमारे पास एक कविता है जो संक्रमणकालीन है, लेकिन यह एक बहुत, बहुत, बहुत महत्वपूर्ण बिंदु भी बनाती है जिसे मुझे लगता है कि ल्यूक के कई पाठकों, ल्यूक के श्रोताओं ने पकड़ लिया होगा। वे श्रोता इसलिए कहते हैं क्योंकि आम तौर पर एक व्यक्ति पढ़ता है और बाकी लोग सुनते हैं।

उनके पास हर किसी के लिए पर्याप्त प्रतियां नहीं थीं और अधिकांश लोग वैसे भी पढ़ नहीं सकते थे। तो, वह एक साइमन टान्नर के घर में रह रहा था। साइमन फिर से एक सामान्य नाम है, इस अवधि के सबसे आम नामों में से एक।

साइमन एक यूनानी नाम था, लेकिन इसका प्रयोग अक्सर यहूदी लोगों के लिए किया जाता था। उन्हें वह नाम पसंद आया क्योंकि वह भी पितृसत्तात्मक नाम था. शिमोन याकूब के 12 पुत्रों में से एक था।

इसलिए, यह इस अवधि में सबसे आम नामों में से एक बन गया था। लेकिन चर्मकार तेज गंध से जुड़े थे। तुम मरे हुए जानवरों की खालें साफ कर रहे थे।

इसलिए, वे शहरों से बाहर रहते थे। उन्हें शहर की सीमा के अंदर रहने की अनुमति नहीं थी क्योंकि पड़ोसी परेशानी पैदा करते थे। बाद में रब्बियों ने यहां तक कह दिया कि अगर पत्नियों चर्मकारों की गंध बर्दाश्त नहीं कर पातीं तो वे उन्हें तलाक दे सकती हैं।

खैर, कई लोग अधिक उदार थे, हालाँकि, यदि चमड़े का कारखाना पानी के पास होता जैसा कि यहाँ है। यह एक यहूदी चर्मकार है. और इसलिए, वह इसे समुद्र के पास कर रहा है।

यह एक तटीय शहर है। लेकिन इससे हमें पता चलता है कि पीटर उतना विशिष्ट नहीं है। निःसंदेह, उन्होंने मरी हुई मछलियों को खुद ही संभाला था, लेकिन वे उतने विशिष्ट नहीं थे जितने कि उनके समकालीनों में से कुछ बहुत ही रूढ़िवादी यहूदी रहे होंगे।

और यह सहायक होने वाला है क्योंकि वह अपने जीवन के सदमे में आने वाला है क्योंकि उसे न केवल एक चर्मकार के पास, न केवल सामरी लोगों के पास, बल्कि एक अन्यजाति के पास भेजा गया है। और किसी भी प्रकार का गैर-यहूदी नहीं, बल्कि कोई ऐसा व्यक्ति जो कैसरिया में उन सभी स्थानों पर रोमन सेना के लिए काम करता है, जहां रोमन सेना में सीरियाई सहायक अक्सर वहां रहने वाले यहूदी समुदाय के साथ बहुत अच्छी तरह से नहीं मिलते थे। प्रेरितों के काम अध्याय 10 से शुरू करके और अभी प्रेरितों के काम अध्याय 10 का परिचय देते हुए, हम कुरनेलियुस और शमौन पतरस के युग्मित दर्शन, युग्मित दर्शन प्राप्त करने जा रहे हैं।

वे अध्याय 9 और श्लोक 12 में पॉल या शाऊल और हनन्याह के युग्मित दर्शन के समान हैं। यह कुछ ऐसा है जिसकी पुष्टि होने वाली है। यह अधिनियमों की पुस्तक में एक बहुत ही रणनीतिक केंद्रीय संक्रमणकालीन खंड है क्योंकि हमारे पास बहुत कम चीजें हैं जो अधिनियमों की पुस्तक में तीन बार वर्णित हैं।

परन्तु शाऊल का परिवर्तन उनमें से एक है। इसका वर्णन प्रेरितों के काम अध्याय 9 में किया गया है। इसका वर्णन स्वयं पौलुस ने प्रेरितों के काम अध्याय 22 में किया है। इसका वर्णन स्वयं पॉल ने प्रेरितों के काम अध्याय 26 में किया है।

खैर, कुरनेलियुस, उसके रूपांतरण का वर्णन यहाँ किया गया है। इसे पीटर द्वारा फिर से सुनाया गया है, इसे अध्याय 11 में जेरूसलम चर्च को और अधिक संक्षेप में बताया गया है। और इसे अध्याय 15 में पीटर द्वारा फिर से सुनाया गया है, संक्षेप में, क्योंकि वह अन्यजातियों के बीच जो हो रहा है उसके समर्थन में एक मिसाल के रूप में इसकी अपील कर रहा है।

तो, यह कैसरिया मैरिटिमा में होता है। कैसरिया मैरिटिमा यहूदिया का सबसे बड़ा शहर था। यहीं पर रोमन गवर्नर रुके थे।

यरूशलेम उसके लिए बहुत असुविधाजनक जगह थी, लेकिन कैसरिया मैरिटिमा में बहुत अधिक गैर-यहूदी थे। कैसरिया मैरिटिमा कैसरिया फिलिप्पी के समान नहीं है जिसके बारे में आपने मैथ्यू 16 या मार्क अध्याय 8 में पढ़ा है। कैसरिया मैरिटिमा को मूल रूप से स्ट्रैटोस टॉवर कहा जाता था। इसका नाम बदलकर हेरोदेस महान रखा गया।

हेरोदेस ने वहां यहूदिया के तट पर सबसे अच्छा बंदरगाह बनाया। इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा आज भी बना हुआ है। हमारे पास अभी भी स्मारक हैं।

पुरातत्ववेत्ताओं ने इसका अध्ययन किया है। कैसरिया के थिएटर में लगभग 4,000 लोग बैठते थे। इसलिए, सामान्य अनुमान के अनुसार, कम से कम वर्तमान में, लोग अक्सर अनुमान लगाते हैं कि शहर की जनसंख्या एक थिएटर के आकार से लगभग 10 गुना अधिक है।

हर निवासी नागरिक नहीं होगा, और जरूरी नहीं कि हर नागरिक हमेशा थिएटर में दिखे। लेकिन इसका मतलब यह हो सकता है कि शहर में शायद 40,000 लोग या कुछ और थे। लेकिन यह तट पर बसे शहरों में सबसे महत्वपूर्ण था।

यह यहूदिया के रोमन गवर्नर का निवास स्थान था और रोमन गवर्नर के पास वहाँ बहुत सारी सेनाएँ भी थीं। वहाँ पाँच सहायक दल और घुड़सवार सेना थी। इस अवधि में एक दल में 480 से 600 सैनिक शामिल थे।

यह संक्रमण का दौर था, इसलिए यह निर्भर करता है। कुछ दल 480 रहे होंगे, कुछ 600 रहे होंगे। वहाँ पाँच दल थे, और यरूशलेम में एक और दल था।

एक सेना 10 दलों से बनी होती थी और इसमें कुल मिलाकर लगभग 6,000 सैनिक होते थे। लेकिन वहाँ सीरियाई सैनिक, सहायक मुख्य रूप से स्थानीय रंगरूट थे। वास्तव में, इस अवधि तक सेनाओं में भी, उनमें से बहुत से लोग स्थानीय क्षेत्र से थे।

वे सीरियाई होंगे, हालाँकि वे रोमन नागरिक होंगे। लेकिन सहायक सैनिकों में, मुख्य रूप से सीरियाई, उनकी आधी सेना सिर्फ यहूदिया में है, उनमें से अधिकांश यहां कैसरिया में हैं, यरूशलेम में पलटन को छोड़कर। सीरियाई सैनिक अक्सर शहर के यहूदी निवासियों के विपरीत अन्य सीरियाई निवासियों का पक्ष लेते थे, जिसके बारे में यहूदी निवासी अक्सर शिकायत करते थे।

सीरियाई निवासियों को स्थानीय क्षेत्र से बहुत लगाव था। उनमें से कुछ स्थानीय क्षेत्र से हो सकते हैं, और अन्य निश्चित रूप से रखैलों आदि के साथ इससे जुड़ गए हैं। व्यवहार में, शायद पत्नियाँ, हालाँकि आपको अपनी 20 वर्षों की सेवा के दौरान वास्तव में शादी करने की अनुमति नहीं थी।

सेंचुरियन. कुरनेलियुस एक शतपति है। एक शताब्दी में लगभग 80 सैनिक शामिल थे।

नाम एक शतक है, आप सोचेंगे कि यह शतक है, लेकिन वह कागजी ताकत थी। यह लगभग 80 आदमी थे। ट्रिब्यूनस या लेगेट्स के विपरीत, जो आम तौर पर अभिजात वर्ग से होते थे, ये मूल रूप से राजनीतिक कार्यालय थे।

कोई व्यक्ति रोम से सीधे इन उच्च रैंकों तक पहुंचने के लिए काम करेगा। लेकिन उन अभिजात्य लोगों के विपरीत, जिन्हें वे कार्यालय, सेनाओं और समूहों की कमान संभालने वाले ट्रिब्यून मिले, इसके लिए ग्रीक शब्द एक चिलीआर्क, एक हजार सैनिकों का कमांडर था। फिर, यह एक कागजी ताकत है।

लेकिन आम तौर पर, सेंचुरियन सिर्फ रैंकों के माध्यम से अपना रास्ता बनाते थे। तो, आपके पास कुछ रोमन अभिजात होंगे जो सेंचुरियन बन सकते हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश ने सैनिकों के रूप में शुरुआत की, और उनकी 20 साल की सेवा के अंत तक, या शायद उन्होंने लंबे समय तक रहने का फैसला किया, वे सेंचुरियन बन गए। इस समूह को इटालियन समूह कहा जाता है।

इसका मतलब यह नहीं है कि वे सभी इटली से यहां लाए गए थे। मूल दल इटली का हो सकता है, लेकिन अब यह मुख्य रूप से सीरियाई लोगों से बना हो सकता है। हमारे पास इसके सबूत हैं, इस सीमा के विशेष वर्षों में नहीं क्योंकि हमारे पास बहुत सीमित सबूत हैं, लेकिन हमारे पास इस अवधि से हैं।

इटालियन समूह को यहूदिया में वर्ष 69 में जाना जाता है। यह वहां पुरातात्विक रूप से प्रमाणित है। कॉर्नेलियस शायद 66 से 70 के युद्ध के दौरान सेवानिवृत्त हो गए थे, क्योंकि आप रोमन सेना से 60 साल की उम्र में सेवानिवृत्त होंगे, यदि उससे पहले नहीं, क्योंकि 20 साल की सेवा के बाद, उन्हें आम तौर पर 18 साल की उम्र में भर्ती किया जाता था, तो ठीक है इससे पहले।

लेकिन कॉर्नेलियस को निश्चित रूप से 60 वर्ष की आयु तक सेवानिवृत्त होना पड़ा होगा। इसलिए वह वास्तव में यहूदी-रोमन युद्ध में शामिल नहीं है जो ल्यूक के लिखने के समय तक हो सकता था। मैं सैन्य सेवा के बारे में थोड़ा और बताऊंगा, और फिर हम कॉर्नेलियस के बारे में और अधिक बात करने के लिए संक्रमण के लिए तैयार होंगे।

सैन्य सेवा एक पसंदीदा व्यवसाय था, हालाँकि भर्ती करने वालों में से शायद केवल आधे ही सेवा के पूरे 20 वर्षों तक जीवित रहे। तो, यह उम्र के हिसाब से एक बड़ा जोखिम ले रहा था, क्षमा करें मैंने कहा 18, उम्र सामान्यतः 17 से 37 वर्ष होती है। उनकी भर्ती 25 वर्ष बाद प्रथम शताब्दी में हुई, परन्तु इस अवधि में यह अभी भी 20 वर्ष ही थी।

गैर-नागरिक सेनाओं में शामिल नहीं हो सकते थे, लेकिन वे सहायक सैनिकों में शामिल हो सकते थे, और यदि आप बच गए तो यह बहुत उपयोगी था, खासकर यदि आप भारी-भरकम सैन्य संघर्ष में नहीं थे। सहायक सैनिकों को उनके निर्वहन पर रोमन नागरिकता प्राप्त हुई, और यह एक विशेष विशेषाधिकार था, विशेष रूप से प्रतिष्ठित यदि आप पूर्वी भूमध्यसागरीय दुनिया में रहते थे, जहां कभी-कभी इस अवधि में कई नागरिक अधिकारियों के पास अभी तक रोमन नागरिकता नहीं थी। लेकिन उन्हें दिव्य सम्राट के प्रति निष्ठा की शपथ भी लेनी होगी।

यही एक कारण था कि रोमन सेना में यहूदी लोग सेवारत नहीं थे। हम ल्यूक के अधिनियमों में अन्यत्र सैनिकों के बारे में पढ़ते हैं। ऐसा लगता है कि ल्यूक, यदि कुछ भी हो, उन्हें महत्व देने के लिए अपने रास्ते से हट जाता है।

ल्यूक अध्याय 3, हमारे पास सैनिक हैं जो जॉन बैपटिस्ट से कह रहे हैं, अच्छा, हमें क्या करना चाहिए? और जॉन कहते हैं, किसी को धोखा मत दो। अपने पद का उपयोग शोषणकारी या अपमानजनक तरीके से न करें, क्योंकि वे कह सकते हैं, ठीक है, आपको मुझे अपने गधे का उपयोग करने देना होगा, आपको मुझे अपने गधे का उपयोग करने देना होगा... उनके पास हथियार थे। बाद में अधिनियम 27 में, हम देखेंगे कि जूलियस, सूबेदार जो पॉल के साथ रोम जा रहा है, उन्हें जहाजों पर उनके लिए रास्ता देता है, और वह उनके लिए भोजन उपलब्ध करा सकता है क्योंकि वह एक सैनिक है और वह रोम का प्रतिनिधि है।

लेकिन कभी-कभी उन्होंने इसका शोषण किया, अपने लिए चीजें प्राप्त करने के लिए इसका इस्तेमाल किया। ल्यूक अध्याय 7 में, हमारे पास एक सूबेदार है जो ईश्वर से डरता है। ल्यूक अध्याय 23 में, क्रूस पर सूबेदार यीशु को एक निर्दोष व्यक्ति के रूप में स्वीकार करता है।

प्रेरितों के काम अध्याय 27 में आपके पास सूबेदार जूलियस है। आपके पास प्रेरितों के काम 24 इत्यादि में पॉल की देखभाल करने वाले सेंचुरियन भी हैं। तो हो सकता है कि ल्यूक हमें शांति के राजकुमार के बारे में सिखा रहा हो।

वास्तव में, वह घोषणा है जो ल्यूक अध्याय 2 में सम्राट ऑगस्टस से भिन्न है। ऑगस्टस के पास यह कर जनगणना है। लोग जनगणना का उत्तर देने के लिए उन स्थानों पर वापस जाते हैं जहां उनकी संपत्ति होती है। और आपके पास यह विरोधाभास है क्योंकि शक्तिशाली सम्राट को भगवान के रूप में सम्मानित किया गया था।

उन्हें एक उद्धारकर्ता और भगवान के रूप में सम्मानित किया गया था। उन्हें पैक्स रोमाना, रोमन शांति लाने वाले के रूप में सम्मानित किया गया था, जो वास्तव में एक कानूनी कल्पना के अलावा और कुछ नहीं था क्योंकि उन्होंने दावा किया था कि उन्होंने ज्ञात दुनिया पर विजय प्राप्त की थी। और हर कोई जानता था कि उन्होंने अपने कट्टर शत्रु पार्थिया पर विजय नहीं पाई है।

उन्होंने न्युबियनों पर विजय नहीं पायी थी। उन्होंने जर्मनों पर विजय नहीं पायी थी। उन्होंने अभी तक ब्रिटानियों पर विजय भी नहीं पायी थी।

लेकिन किसी भी मामले में, उन्हें शांति लाने वाले के रूप में सम्मानित किया गया। और फिर आपके पास ये चरवाहे हैं जिन्हें निम्न वर्ग का माना जाता था। वे आम तौर पर कुलीन लोगों द्वारा तिरस्कृत थे।

इन चरवाहों को प्रभु के दूत और स्वर्ग की मेज़बान द्वारा सच्चे और महान राजा के बारे में सूचित किया जाता है, जिसका जन्म जानवरों को चराने वाले कुंड में हुआ था। और यह राजा, जिसका वादा किया गया था, उसके बारे में यह कहा गया था, आज आपके लिए एक उद्धारकर्ता पैदा हुआ है, असली उद्धारकर्ता, जो मसीह है, असली भगवान है। धरती पर शांति और मानवता के प्रति सद्भावना।

और जब पतरस कुरनेलियुस को उपदेश दे रहा था, तो वह यीशु के बारे में बात कर रहा था जो शांति का प्रचार करता था। खैर, रोमनों को यह सुनना पसंद है। लेकिन रोमन सामान्यतः शांतिपूर्ण तरीकों से अपने साम्राज्य का विस्तार नहीं कर रहे थे।

उन्होंने आम तौर पर विजय प्राप्त करके इसका विस्तार किया जैसा कि क्लॉडियस इसके तुरंत बाद ब्रिटेन में कर रहा था। यीशु शांति के राजकुमार थे। और फिर भी शांति के बारे में बात करने का मतलब यह नहीं था कि उन्हें उन लोगों की परवाह नहीं थी जो सैन्य सेवा में थे।

वे लोग परमेश्वर के प्रिय थे। ल्यूक स्पष्ट रूप से उनकी परवाह करता है। वह हमें उनके बारे में बहुत कुछ बताता है।

और केवल सैनिक ही नहीं बल्कि रोमन सेना के इस अधिकारी के लिए भी खुशखबरी आने वाली है।

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह अधिनियम 9 पर सत्र 12 है।